॥ स्तर 1 - श्रीमद्भगवद्गीता शुद्ध उच्चारण मार्गदर्शिका ॥

(यह मार्गदर्शिका प्राथमिक स्तर के भगवद्गीता प्रशिक्षार्थियों के लिये बनायी गयी है)

ह्रस्व एवं दीर्घ उच्चारण नियम -

- ह्रस्व **अ, इ, उ, ऋ, लृ** से बने अक्षरों का उच्चारण ह्रस्व (समय-एक काल) करें, दीर्घ नहीं।
- दीर्घ **आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ** इन अक्षरों से बने सभी अक्षरों का उच्चारण दीर्घ (समय-दो काल) करें, ह्रस्व नहीं।

अनुस्वार उच्चारण नियम –

- अनुस्वार – ऐसा वर्ण, जो स्वर का अनुसरण करता है अर्थात् स्वर के पश्चात् आता है और जिसका उच्चारण नासिका से किया जाता है।
- अनुनासिक – ऐसा वर्ण, जिसका उच्चारण मुख और नासिका से किया जाता है।
- अनुस्वार का उच्चारण अगले वर्ण पर निर्भर करता है अर्थात् वह अनुस्वार अगले वर्ण के अनुसार परिवर्तित होता है।

क वर्ग

- **क्, ख्, ग्, घ्, ङ्** कण्ठ्य वर्ण हैं, इनका उच्चारण कण्ठ से होता है।
- इस वर्ग का अनुनासिक **'ङ्'** है, अतः इस वर्ग के वर्णों से पहले आने वाले अनुस्वार का उच्चारण **'ङ्'** करें। जैसे - **कंकण (कङ्कण), पंख (पङ्ख), गंगा (गङ्गा), संघ (सङ्घ)**
- **'क्ष'** संयुक्त वर्ण है **(क्+ष=क्ष)**, जिसमें **'क्'** प्रथम वर्ण है, अतः **'क्ष'** अक्षर से पहले आने वाले अनुस्वार का उच्चारण **'ङ्'** होगा। जैसे - **संक्षिप्त (सङ्क्षिप्त)**

च वर्ग

- **च्, छ्, ज्, झ्, ञ्** तालव्य वर्ण हैं, इनका उच्चारण तालू से होता है।
- इस वर्ग का अनुनासिक **'ञ्'** है, अतः इस वर्ग के वर्णों से पहले आने वाले अनुस्वार का उच्चारण **'ञ्'** करें। जैसे - **चंचल (चञ्चल), पंछी (पञ्छी), पंजा (पञ्जा), रांझा (राञ्झा)**
- **'ज्ञ'** संयुक्त वर्ण है **(ज्+ञ=ज्ञ)**, जिसमें **'ज्'** प्रथम वर्ण है, अत: **'ज्ञ'** पूर्व आने वाले अनुस्वार का उच्चारण **'ञ्'** होगा। जैसे – **इदं+ज्ञानम्** = **इदञ्ज्ञानम्**

ट वर्ग

- **ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्** मूर्धन्य वर्ण हैं, इनका उच्चारण मूर्धा से होता है।
- इस वर्ग का अनुनासिक **'ण्'** है, अतः इस वर्ग के वर्णों से पहले आने वाले अनुस्वार का उच्चारण **'ण्'** करें। जैसे - **घंटा (घण्टा), कंठ (कण्ठ), पंडित (पण्डित), षंढ (षण्ढ)**

त वर्ग

- **त्, थ्, द्, ध्, न्** दन्त्य वर्ण हैं, इनका उच्चारण दन्त से होता है।
- इस वर्ग का अनुनासिक **'न्'** है, अतः इस वर्ग के वर्णों से पहले आने वाले अनुस्वार का उच्चारण **'न्'** करें। जैसे - **पंत (पन्त), पंथ (पन्थ), कंद (कन्द), अंध (अन्ध)**
- **'त्र'** संयुक्त वर्ण है **(त्+र=त्र)**, जिसमें **'त्'** प्रथम वर्ण है अत: **'त्'** से पूर्व आने वाले अनुस्वार का उच्चारण **'न्'** होगा। जैसे - **तंत्र (तन्त्र)**

प वर्ग

- **प्, फ्, ब्, भ्, म्** ओष्ठ्य वर्ण हैं, इनका उच्चारण ओष्ठ से होता है।
- इस वर्ग का अनुनासिक **'म्'** है, अतः इस वर्ग के वर्णों से पहले आने वाले अनुस्वार का उच्चारण **'म्'** करें। जैसे - **चंपा (चम्पा), इंफाल (इम्फाल), संबल (सम्बल), दंभ (दम्भ)**

विशिष्ट वर्ग

'क' से **'प'** वर्ग तक के व्यंजनों से पूर्व आने वाले अनुस्वार का उच्चार कैसे करें यह हमने देखा। अब **'य'** से **'ह'** तक प्रत्येक वर्ण के पूर्व आने वाले अनुस्वारों का कैसे उच्चारण करें यह देखते हैं। उच्चारण स्पष्टता से समझ में आये, इस हेतु कोष्ठक में वह अक्षर लिखे हैं। ध्यान रहे, वास्तव में ये वर्ण वहाँ नहीं हैं, केवल अनुस्वार के उच्चारण की स्पष्टता और प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षार्थियों के सुलभता हेतु उन्हें यहाँ निर्दिष्ट किया गया है।

पद के बीच में अनुस्वारयुक्त वर्ण के बाद आने वाले 'य' से 'ह' तक के उदाहरण

पद के बीच में आने वाले **'य'** से **'ह'** तक के अक्षरों से पहले अनुस्वार युक्त अक्षर आने पर, अनुस्वार का उच्चारण आनुनासिक **'यँ्', 'लँ्'** अथवा **'वँ्'** होता है।

- **य** - संयम [सं(यँ्)यम], संयोगिता [सं(यँ्)योगिता], संयुक्त [सं(यँ्)युक्त]
- **ल** - संलग्न [सं(लँ्)लग्न], संलाप [सं(लँ्)लाप]
- **व** - संवाद [सं(वँ्)वाद], संवर्धन [सं(वँ्)वर्धन], संवेदना [सं(वँ्)वेदना]
- **र** - संरचना [सं(वँ्)रचना], संरक्षण [सं(व्)रक्षण], संरेखण [सं(वँ्)रेखण]
- **श/ष** - संशय [सं(वँ्)शय], वंश [वं(वँ्)श] , दंश [दं(वँ्)श], दंष्ट्रा [दं(वँ्)ष्ट्रा], संश्रय [सं(वँ्)श्रय]
- **स** - कंस [कं(वँ्)स], संसार [सं(वँ्)सार], संसर्ग [सं(वँ्)सर्ग]
- **ह** - सिंह [सिं(वँ्)ह], संहार [सं(वँ्)हार], संहिता [सं(वँ्)हिता]

पद के अन्त में अनुस्वारयुक्त वर्ण के बाद आने वाले 'य' से 'ह' तक के उदाहरण

पद के अन्त में आने वाले अनुस्वारयुक्त वर्ण के बाद '**य** से **ह**' वर्ण आने पर अनुस्वार का उच्चारण होता है-

- **य** - धर्म्यामृतमिदं(यँ्) यथोक्तम्
- **र** - लोकमिमं(म्) रविः
- **ल** – तदोत्तमविदां(लँ्) लोकान्
- **व** - ध्यानं(वँ्) विशिष्यते
- **श/ष** - इदं(म्) शरीरम्
- **स** - एवं(म्) सतत
- **ह** - क्षयं(म्) हिंसाम्

विसर्ग उच्चारण नियम –

नियम 1 : पंक्ति के अंत में आने वाले विसर्ग के उच्चारण –

विसर्ग भी नित्य स्वर के पश्चात् ही आता है। भगवद्गीता में पंक्ति के अन्त में आने वाले विसर्गों का उच्चारण कुछ 'ह्' जैसे किया जाता है, स्वरों के अनुसार यह **ह, हु, हे, हि** आदि में परिवर्तित हो जाता है। उदाहरण -

विसर्ग का पूर्व स्वर -

- यदि 'अ' है तो विसर्ग का उच्चारण 'ह/हा' जैसे होगा। उदा. - **संशयः - संशयह/संशयहा**
- यदि 'आ' है तो विसर्ग का उच्चारण 'हा' जैसे होगा। उदा. - **रताः - रताहा**
- यदि 'इ', 'ई', 'ऐ' हैं तो विसर्ग का उच्चारण 'हि' जैसे होगा। उदा. - **मतिः - मतिहि**, **धर्मैः - धर्मैहि**
- यदि 'उ', 'ऊ', 'औ' हैं तो विसर्ग का उच्चारण 'हु' जैसे होगा। उदा. - **कुरुः - कुरुहु**, **गौः - गौहु**
- यदि 'ए' है तो विसर्ग का उच्चारण 'हे' जैसे होगा। उदा. - **भूमेः - भूमेहे**
- यदि 'ओ' है तो विसर्ग का उच्चारण 'हो' जैसे होगा। उदा. - **मानापमानयोः - मानापमानयोहो**

नियम 2 : कुछ विशिष्ट वर्णों से पूर्व आने वाले विसर्ग के उच्चारण –

दो पदों के बीच में आने वाले विसर्ग का उच्चारण उसके आगे वाले वर्ण के अनुसार होता है -

- यदि विसर्ग के पश्चात् 'क्' अथवा 'ख्' यह वर्ण आते हैं**,** तो उस विसर्ग का उच्चारण कुछ 'ख्' की तरह करना है। ध्यान रहे उच्चारण 'ख्' की तरह करना है 'ख्' नहीं।

  जैसे- **मैत्रः करुण एव च – मैत्रः(ख्) करुण एव च**
- यदि विसर्ग के पश्चात् 'प्' अथवा 'फ्' यह वर्ण आते हैं**,** तो उस विसर्ग का उच्चारण कुछ 'फ्' की तरह करना है। ध्यान रहे उच्चारण 'फ्' की तरह करना है 'फ्' नहीं।

  जैसे - **ततः पदं तत्परिमार्गितव्यम् – ततः(फ्) पदं तत्परिमार्गितव्यम्**
- विसर्ग के पश्चात् यदि 'स्', 'श्' अथवा 'ष्' ये वर्ण आते हैं, तो उस विसर्ग का उच्चारण क्रमशः 'स्', 'श्' और 'ष्' की तरह होता है। उदाहरण - **यो मद्भक्तः स मे प्रियः = यो मद्भक्तस्स मे प्रियः**

  ऊर्ध्वमूलमधः शाखम् = ऊर्ध्वमूलमधश्शाखम्

  मनः षष्ठानीन्द्रियाणि = मनष्षष्ठानीन्द्रियाणि

विशेष नियम : यदि विसर्ग के पश्चात् 'क्ष' वर्ण आता है**,** तो उस विसर्ग का उच्चारण नियम 1 की भाँति **ह, हि, हु, हे** रहेगा। उदाहरण - **तेजः क्षमा = तेजह क्षमा**

विसर्ग सन्धि नियम -

सन्धि करते समय भगवद्गीता में कई स्थानों पर विसर्ग का परिवर्तन **र्, स्, श्, ष्** आदि में होता दीखता है यह परिवर्तन विसर्ग सन्धि के नियम के कारण होते हैं, वह बहुत विस्तृत हैं इसलिये उनको आगे के स्तरों पर समझाया जायेगा, अभी आप पीडीएफ में जहाँ जैसा परिवर्तन दिया है, उसका वैसा अभ्यास करें।

उदाहरण - **बुद्धिः यो – बुद्धिर्यो, परयोपेताः ते – परयोपेतास्ते, वेदैः च – वेदैश्च**

यहां अवधेय है कि विसर्ग के पश्चात् उपर्युक्त वर्णों के अतिरिक्त किसी भी वर्ण के आने पर विसर्ग का उच्चारण नियम -1 की भांति ह, हु, हे, हि आदि होगा |

अवग्रह(ऽ) –

अवग्रह **'ऽ'** एक चिह्न जो संधि के कारण हुए 'अकार(अ)' के लोप को दर्शाता है। वस्तुत: इसका कोई विशेष उच्चारण नहीं होता। केवल विग्रह के समय अर्थभेद न हो इसलिए इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे - प्रयाणकाले+अपि - प्रयाणकालेऽपि

आघात उच्चारण नियम -

- किसी स्थान पर संयुक्त वर्ण (दो व्यंजनों का संयोग) आने पर उसके पहले आने वाले स्वर पर आघात देना चाहिए अर्थात् संयुक्त वर्ण के प्रथम वर्ण का द्वित्व(दो बार पढ़ना) करना चाहिये। जहाँ आघात आना चाहिये वहाँ संकेत हेतु प्रत्येक श्लोक में वर्णों के ऊपर '||' चिह्न दिया गया है।

  जैसे - **क्ष(क्+ष), त्र(त्+र), ज्ञ(ज्+ञ), त्य(त्+य), व्य(व् +य)** आदि संयुक्त वर्ण हैं ।

  उदाहरण - **मव्यक्तम् = मव् + व्यक् + क्तम्** **मे प्रियः = मेप् + प्रियः**
- यदि किसी व्यंजन का स्वर के साथ संयोग हो तो वह संयुक्त वर्ण नहीं होता इसलिये वहाँ आघात भी नहीं होगा। उदाहरण - **'ऋ'** एक स्वर है अतः **'विसृजाम्यहम्'** में **'सृ'='स्+ऋ'** में **'सृ'** से पूर्व **'वि'** पर आघात नहीं होगा। संयुक्त वर्ण से पूर्व स्वर पर ही आघात दिया जाता है किसी व्यंजन, अनुस्वार या विसर्ग पर नहीं। उदाहरण - **'वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्'** में 'व्र' संयुक्त होने पर भी पूर्व में अनुस्वार होने से आघात नहीं आयेगा।
- कुछ स्थानों पर स्वर के पश्चात् संयुक्त वर्ण होने पर भी अपवाद नियम के कारण आघात नहीं दिये गये हैं जैसे संयुक्त वर्ण में :
  1. एक ही वर्ण के दो बार आने से – मय्यावेश्य में **म** पर, उत्तिष्ठ में **उ** पर आघात नहीं आयेगा |
  2. तीन व्यंजनों के संयुक्त होने से – भक्त्या में **भ** पर, येन्द्रिय में **ये** पर आघात नहीं आयेगा |
  3. प्रथम वर्ण रेफ(उपर र्) या हकार आने पर – सर्वत्र में **स** पर, गुह्य में **गु** पर आघात नहीं आयेगा |

संस्कृत भाषा में वर्णों के उच्चारों के लिये मुख के विभिन्न स्थानों का प्रयोग होता है। इस चित्र में वर्णों के उच्चारण स्थानों को दर्शाया जा रहा है। नियत स्थान का प्रयोग करके हम हमारे उच्चारों को अधिक से अधिक शुद्ध बना सकते हैं। संस्कृत भाषा कितनी वैज्ञानिक और समृद्ध है इसको निम्न चित्र से जाना जा सकता है।

|| इति ||

गीता परिवार साहित्य का उपयोग किसी अन्य स्थान पर करने हेतु पूर्वानुमति आवश्यक है।
अनुमति हेतु पूर्ण प्रयोजन **consent@learngeeta.com** *पर हमें लिखें।*